एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पश्चिमी राजस्थान में खेजड़ी के पेड़ों में मृत्यु दर की समस्या

(*सुनील कुमार यादव, सुरेश चंद कांटवा, अक्षय घिंटाला, विक्रमजीत सिंह, अशोक चौधरी, कंचन शिला एवं गुलाब चौधरी)
कृषि विज्ञान केंद्र, हनुमानगढ़-II (नोहर), राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: gulabchoudhary8796@gmail.com

खेजड़ी, प्रोसोपिस सिनेरेरिया एल. (लेग्युमिनोसी) भारत के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली सबसे आम वृक्ष प्रजातियों में से एक है। इसे उत्पादों और सेवाओं की श्रेणी के लिए रेगिस्तान का राजा वृक्ष, रेगिस्तान में रहने वालों की जीवन रेखा और रेगिस्तान के 'कल्पवृक्ष' के रूप में जाना जाता है। यह एक नाइट्रोजन स्थिरीकरण वृक्ष है जो मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है। पत्तियां (जिन्हें लूंग कहा जाता है) पौष्टिक होती हैं और पशुओं के लिए हरे और सूखे फोल्डर के रूप में उपयोग की जाती हैं। हरी फली (जिसे 'संगरिया' या 'सांगर' के नाम से जाना जाता है) का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है। सूखे हरी फलियों को संग्रहित किया जाता है और साल भर खाना पकाने के लिए उपयोग किया जाता है। सूखे परिपक्व फली (जिसे 'खो–खा' कहा जाता है) का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जाता है। सांस्कृतिक रूप से जन्माष्टमी (भगवान कृष्ण का जन्म दिवस) पर खेजड़ी की हरी टहनियों की पूजा की जाती है। यह बिश्नोई समुदाय द्वारा सम्मानित और पूजा की जाती है।
खेजड़ी राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग दो–तिहाई भाग कवर करता है। राजस्थान के पश्चिमी जिले खेजड़ी मृत्यु की समस्या का सामना कर रहे हैं जो 10 से अधिक वर्षों से 18.08 से 22. 67: तक रही है।

मृत्यु के कारण

खेजड़ी की मृत्यु के कारण संभवतः अजैविक और जैविक कारकों के संयुक्त प्रभाव के कारण हैं। अजैविक कारक जैसे नलकूपों के माध्यम से भूजल का अत्यधिक दोहन, वर्षों में कम बारिश, परिणामस्वरूप कम भूजल चार्जिंग और ट्रैक्टरों के बढ़ते उपयोग और मशीनीकृत खेती के कारण कृषि पद्धतियों में बदलाव, जिसके परिणामस्वरूप खड़े पेड़ों की जड़ों को नुकसान आदि, खेजड़ी मृत्यु के कारणों में शामिल हैं। खेजड़ी के आवरण में कमी का मूल कारण इसकी अत्यधिक कटाई (शाखाओं को काटना) है, जो सभी खेत मालिक सालाना इसके फल, फली, पत्ते, शाखाएं और टहनियाँ के लिए करते हैं। राजस्थान में खेजड़ी मृत्यु दर के लिए जिम्मेदार मुख्य जैविक कारक जड़ बेधक, एकैंथोफोरस सेराटिकोर्निस और गनोडर्मा ल्यूसिडम के कारण होने वाले जड़ सड़न रोग हैं। शाखाओं की अत्यधिक कटाई, विशेष रूप से

आकृति 1 नोहर (राजस्थान) में सूखा हुआ खेजड़ी का पेड़

सूखे के दौरान, पेड़ को कीड़ों के प्रति संवेदनशील बना देती है। पेड़ का स्टंप कीट के अंडे देने के लिए उपयुक्त जगह है और लार्वा रस और हर्टवुड को खाकर ऊतक को नष्ट कर देते हैं। हर साल नए पत्तों की संख्या कम होती जाती है और अंत में दो से तीन साल में पेड़ मर जाता है।

निष्कर्ष

खेजड़ी में मृत्यु बहुकारक प्रभाव का परिणाम है लेकिन अभी तक कुछ भी निर्णायक नहीं है। किसानों को शाखाओं की अत्यधिक कटाई से बचना चाहिए। स्थिति में सुधार के लिए खेजड़ी के पेड़ों के जड़ क्षेत्र में कीटनाशकों और कवकनाशी के प्रयोग की सलाह दी जाती है।